This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5576**

Unique Paper Code : **205441** **E**

Name of the Paper : **Hindi-C**

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित पाठांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : 8+8+8

(क) इंद्र का ऐरावत,

अश्व स्वयं सूर्य के;

बेटा नगण्य हैं सब

अभी हैं, अभी नहीं ।

मूल्य प्रेम करुणा के

ममता के साध्य अपने,

पंथ हैं अतीव कठिन

इन तक पहुँचने के

किन्तु वे ही सेव्य हैं

शिव हैं, आराध्य अपने ।

P.T.O.

अथवा

छोड़ा मैंने पंथ-मतों को
तब कहलाया मतवाला,
चली सुरा मेरा पग धोने
तोड़ा मैंने जब प्याला;
अब मानी मधुशाला मेरे
पीछे-पीछे फिरती है;
क्या कारण ? अब छोड़ दिया है
मैंने जाना मधुशाला ।

(ख) प्रेमा ने प्रेम-कृतज्ञ नेत्रों से देखा । कंठ गदगद हो गया । मुँह से एक शब्द न निकला । पति के महान त्याग ने उसे विभोर कर दिया । उसके एक इशारे पर अपमान, निंदा, अनादर सहने के लिए तैयार होकर दाननाथ ने आज उसके हृदय पर अधिकार पा लिया । वह मुँह से कुछ न बोली; पर उसका एक-एक रोम पति को आशीर्वाद दे रहा था । त्याग ही वह शक्ति है, जो हृदय पर विजय पा सकती है ।

अथवा

विवाह समाज के संगठन की केवल आयोजना है । जात-पाँत केवल भिन्न-भिन्न काम करने वाले प्राणियों का समूह है । काल के कुचक्र ने तुम्हें एक ऐसी अवस्था में

डाल दिया है, जिसमें प्रेम-सुख की कल्पना करना ही पाप समझा जाता है; लेकिन सोचो तो समाज का यह कितना बड़ा अन्याय है । क्या ईश्वर ने तुम्हें इसीलिए बनाया है कि दो-तीन साल प्रेम का सुख भोगने के बाद आजीवन वैधव्य की कठोर यातना सहती रहो ।

(ग) सत्ता का खेल बहुत देख चुका भैया । माँ ने ठीक कहा था । मुझे आपसे ईर्ष्या हो रही थी-यह सत्य मुझ पर आज प्रकट हुआ है । मुझे सत्ता नहीं, प्यार चाहिए और वह प्यार मिल सकता है साधना के मंगलमय पथ पर । मैं अब नहीं रुक सकूँगा । कामना करूँगा कि आपका चक्रवर्तित्व युग-युगांत तक मानदंड बनकर रहे ।

अथवा

मन पर लगी चोट क्या कम भयानक होती है ? युग-युग तक रिसती रहती है वह, क्योंकि ईर्ष्या-द्वेष सब कुछ मन में ही तो पैदा होता है । क्यों है यह द्वेष, यह स्पर्धा ? कैसा है यह राजधर्म ? क्या अर्थ है अधिकार की रक्षा का ? सब एक-दूसरे के लिए क्यों नहीं जीते ? क्यों नहीं प्रेम जीवन का आधार बन जाता ? भगवान आदिनाथ ने जिसे अहिंसा कहा है, वही क्या प्रेम नहीं है ..... ।

2. 'कालजयी' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

'मधुशाला मस्ती, फक्कड़पन और स्वछन्द जीवन की कविता है ।' इस कथन पर विचार कीजिए ।

3. 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में लेखक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

प्रेमा का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

4. 'सत्ता के आर-पार' नाटक में सत्ता-संघर्ष में युद्ध और अहिंसा के द्वन्द्वात्मक पक्ष पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

भरत और बाहुबली के चरित्रों की तुलना कीजिए ।

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 6

(क) 'सत्ता के आर-पार' की नाट्य-भाषा

(ख) 'कालजयी' की काव्यभाषा ।